2015 - 2016

# पहल

## एक कदम बदलाव की ओर...

# गेंदा फुल की खेती से होनेवाले आर्थिक लाभ की सफलगाथा

dsc
Development
Support
Centre

## परिचयः

मध्य प्रदेश में धार जिले के कुक्षी तहसील का एक गांव है जो आली सुस्तीपुरा फलिया के नाम जाना जाता है। यह एक आदिवासी बाहुल्य पिछड़ा इलाका है ख यहाँ के ग्रामीण आमदनी के लिए मुख्यतः कृषि और मज़दूरी पर निर्भर हैं ।

## किसानों के हालात

जोबट परियोजना में खरीफ सीजन में सिंचाई के पर्याप्त साधन एवं खेती की वैज्ञानिक पद्धति का ज्ञान न होने के कारण यहाँ के किसान आम तौर पर मक्का, सोयाबीन और कपास इत्यादि की परंपरागत तरीके से खेती करते हैं ।

पिछले कुछ वर्षों में खेती का खर्च बहुत बढ़ गया है जबकी खेती से आमदनी लगभग स्थिर सी हो गयी है ख आमदनी के अन्य स्त्रोत न होने से रोजमर्रा की आवश्यकताओं की पूर्ति करना किसानों के लिए मुश्किल हो गया था। यहाँ के लोगों का जीवन उसी इलाके तक सीमित था और वे परंपरागत खेती के अलावा कुछ और जानकारी नहीं रखते थे।

## बदलाव की पहल

डेवलपमेन्ट सपोर्ट सेन्टर (डीएससी) की ओर से चलाए जा रहे कार्यक्रम ङ्गङ्घचिर स्थायी कृषि के माध्यम से किसानो की आजीविका में वृद्धिफ्फ कार्यक्रम के अंतर्गत रतन दोराबजी टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से परम्परागत मक्का फसल के स्थान पर फसल परिवर्तन के रूप में गेंदा फूल फसल का प्रदर्शन प्रयोग एक महिला किसान श्रीमती राजमणिदेवी के खेत पर किया गया। शुरुआत में महिला किसान श्रीमती राजमणिदेवी और अन्य किसानों को संदेह था कि यह कार्य कैसे किया जाए, परंतु डी एस सी के कृषि विशेषज्ञों ने उन्हें समझाया और मार्गदर्शन दिया, उनकी समस्या को पहचाना और किसानों के सीमित संसाधनों में भी अच्छी और अधिक फसल कैसे ली जाती है, उसके बारे में विस्तार से समझाया। नयी खेती के नये तरीके बताए। किसानों को अधिक जानकारी देने और प्रत्यक्ष देखने के लिए डीएससी द्वारा उन्हें प्रेरणा प्रवास करवाया गया और बाहर की दुनिया में क्या हो रहा है उसके बारे में बताया ओर गेंदा फूल की फसल से किसान को कितना अधिक आर्थिक लाभ हो सकता है उसके बारे में अवगत करवाया गया।

## गेंदा फूल - एक रक्षक फसल

गेंदा फूल के लिए कहा जाता है कि यह एक ऐसी पुष्पीय फसल है जिसमें कीट व इल्लियों का प्रकोप कम होता है। उपरांत इसे आसानी से उगाया जा सकता है। जहां खेतों में टमाटर, बैंगन, मिर्च, कपास आदि फसल उगाते हैं वहां इसे मिश्रित तौर पर अंतर्वर्तीय फसलों या बार्डर फसलों के रूप में उगाया जा सकता है। यह एक रक्षक फसल है।

**किस्म का नामः** सकाटा ३०९
**बीजदरः** ५० ग्राम प्रति बीघा
**उत्पादनः** ६ क्विंटल प्रति बीघा
**उचित बुआई समयः** २० मई से १५ जुन तक
**भावः** १५ रूपये से ४० रूपये प्रति किलो ग्राम

**फूल तोडाई का समयः** गेंदा फूल को जून में लगाने का उद्देश्य सही है, ताकि त्योहारों में फूल आ सके जैसेः सावन, गणेश चतुर्थी, नवरात्रि, दीपावली आदि त्योहारों पर तोडाई करना चाहिए, जिससे भाव अच्छा प्राप्त हो सके।
डीएससी के कृषि विशेषज्ञों द्वारा दी गई पूर्ण जानकारी एवं तकनीकी सहायता से महिला किसान राजमणि देवी ने अपने एक बीघा प्लाट में मक्के की फसल की जगह गेंदा फूल की फसल लगाई. एक बीघा में प्रदर्शन प्लाट के तौर पर लगाई गई एस फसल के खर्च का विवरण कुछ इस प्रकार हे.

### प्रदर्शन प्लाट के खर्च का विवरण

| क्रमांक | कार्य का विवरण | गेंदा फुल प्लाट में कुल लागत | मक्का प्लाट में कुल लागत |
|---|---|---|---|
| १ | जुताई का खर्च | ५०० | ७०० |
| २ | गोबर खाद वर्मीकम्पोस्ट पर खर्च | ७५० | ८०० |
| ३ | मिट्टी जांच का खर्च | २० | ० |
| ४ | बीज खरीदी पर खर्च | ५००० | ७०० |
| ५ | बीज उपचार पर खर्च | ५० | ० |
| ६ | बुवाई पर खर्च | ४५० | ४०० |
| ७ | रासायणिक तत्व पर खर्च | ४०० | ९८० |
| ८ | खरपतवार पर खर्च | २०० | ४०० |
| ९ | सुक्ष्म पोषक तत्व पर खर्च | २२० | ० |
| १० | सिंचाइ पर खर्च | ३०० | ३०० |
| ११ | चुनाई/कटाई मडाई थ्रेसिंग पर खर्च | ७५० | ६०० |
| १२ | अन्य खर्च | २५० | २५० |
| | **कुल खर्च** | **८८९०** | **५१३० क्विंटल** |
| | **कुल उत्पादन** | **८क्विंटल** | **४ छिं टल** |
| | **कुल आमदनी** | **रु २१११०** | **रु ५२००** |

## पहले

एक समय था जब किसान १ बीघा ज़मीन में मक्का का ४ क्विंटल पाक लेता था। उसका बाज़ार मूल्य के रू.१३०० प्रति क्विंटल अनुसार उसे रू.५२०० मिलता था।

## सकारात्मक बदलाव

परंपरागत फसल जैसे मक्का इत्यादि करने से किसान को उस जमीन से १ सीजन में लगभग रु. ५००० की आमदनी होती थी वहीँ फूलों की खेती करने से उसे उसी जमीन से लगभग चार गुना फायदा हुआ यानी रु. २०,००० की शुद्ध आय हुई.

जब १ बीघा ज़मीन में गेंदा फूल उगाया तो उसका उत्पादन ८ क्विन्टल मिला। उसमें से ५ क्विन्टल फूल रू.३० प्रति किलो ग्राम के बाजार मूल्य से बेचा जिसका रू.१५,००० प्राप्त हुआ और बाकी के ३ क्विन्टल को रू.५० प्रति किलो ग्राम से बेचने पर भी रू.१५००० प्राप्त हुआ। फुलों की खेती के लिए खर्च किया गया था रू. ८८९० और आय हुई थी रू.३०००। इसका अर्थ हुआ कि कुल आय २१११० रू. हुई।

## किसान का अनुभव

किसान महिला श्रीमती राजमणी पति मनोहर, गांव सुस्तीपुरा के खेत में गेंदा फुलों की प्रदर्शन खेती करने के बाद स्वयं कहती है कि जब मक्का लगाया था तब घर का खर्च चल नहीं पाता था परंतु अब हमने मक्का के स्थान पर गेंदा फूल की खेती शुरु की तो मुझे २० हजार की आमदनी हुई है। मैंने प्रदर्शन फसल केवल १ बीघा ज़मीन में ही उगाने की शुरूआत की थी परंतु अब मैं पूरे २ बीघा ज़मीन में गेंदा फूल ही उगाउंगी।

## चुनौतियाँ

फूलों की खेती बाज़ार की मांग पर निर्भर है और सामान्य रूप से शादी या त्योहार के सीजन के अलावा इसकी मांग सीमित ही रहती है। सुनियोजन इसके लिए आवश्यक है। राजमणि जी ने पहले ही क्षेत्र के व्यापारियों से मिल कर एक भाव तय कर के अपने लिए बाज़ार तय कर लिया। इस से उन्हें अपना माल बेचने के लिए भटकना नहीं पड़ा।

## गेंदा फूल की खेती में ध्यान रखने योग्य बातेः

- हाईब्रीड बीज लगाएँ एवं प्रतिवर्ष नया बीज खरीदें।
- यदि संभव हो तो गेंदा फूल के बीजों को ट्रे-नर्सरी में उगाएं जिस में अंकुरण अच्छा प्राप्त होगा।
- त्योहारों का समय देखकर फूल की तोडाई करें।
- पाउडरी मिल्डयु नामक बीमारी का प्रकोप दिखने पर सल्फर का उपयोग करें।
- बाज़ार की मांग के अनुसार किस्म का चयन करें।
- फूलों की खेती में बीज का चयन तथा उसकी उपलब्धता सुनिश्चित कर लेना आवश्यक है।
- फूलों की खेती मौसम के प्रति काफी संवेदनशील होती है अतः साफ मौसम इसके अनुकूल होता है।
- आंधी तुफान के दौरान पौधे को गिरने व नष्ट होने से बचाने के लिए पौधे के समीप लकड़ी गाड़कर सहारा देने की आवश्यकता होती है।
- स्थानीय बाज़ार का अध्ययन करके ही फूलों की खेती को बोने का आयोजन करना चाहिए अन्यथा उचित मांग के अभाव में किसान को आर्थिक नूकसान उठाना पड सकता है।
- एक से अधिक किसान यदि समूह में फूलों की खेती करें तो व्यापारी खेत में आकर माल खरीद सकते हैं अथवा तो किसान स्वयं बड़े बाज़ारों में अपना माल बेचकर अधिक से अधिक भाव प्राप्त कर सकते हैं।

## उपसंहारः

परंपरागत खेती पर निर्भर रहने की बजाय यदि किसान नई तकनीक से जुड़कर नई फसल उगाना शुरू करे तो, कम खर्च और सीमित साधनों के साथ बड़ा मुनाफा देनेवाली खेती से उनका जीवन खुशहाल हो सकता है । कुक्षी तहसील के आस-पास के गाँव के किसान यदि चाहे तो, मंडी में अच्छे दाम पर बेच कर फूलों से अच्छा खासा मुनाफा कमा सकते हैं।

**प्रतिवेदक** : श्री मोहित पाटीदार • **सहयोग** : श्री कमलेश रजत • **मार्गदर्शक** : श्री मोहन शर्मा

## डीएससी का परिचय

डीएससी वर्ष १९९४ से प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन जैसे कि जल, जमीन और कृषि विकास से आजिविका वृद्धि हेतु ज्ञान आधारित सहयोग प्रदान करने का कार्य कर रही है ख इसके तहत राज्य व केन्द्र सरकार के विभिन्न विभागों तथा अन्य संस्थाओं के साथ जुड़कर नीति निर्धारण, क्षमतावर्धन, अनुसंधान, मूल्यांकन, नेटवर्किंग आदि माध्यम से कृषि में उपयुक्त एवं स्थायी विकास करने हेतु संस्था निरंतर प्रयत्नशील है। डीएससी संस्था गुजरात में मेहसाना, साबरकांठा, आणंद, अमरेली, राजकोट आदि जिलों में तथा मध्यप्रदेश के धार, अलीराजपुर, इन्दौर एवं देवास जिलों में ३०० से अधिक गांवों के लगभग एक लाख किसान परिवारों को वॉटरशेड, सहभागी सिंचाई प्रबंधन तथा कृषि व उद्यमिता विकास आदि कार्यक्रमो के ज़रिए सहयोग कर रही है। रतन दोराब जी टाटा ट्रस्ट, मुंबई; रॉयल बैंक ऑफ स्कॉटलैंड फाउंडेशन, भारत; व आई डी एच के वित्तीय सहयोग से संस्था परियोजना क्षेत्र में कृषि को चिरस्थायी बनाने व कृषि से आजिविका में वृद्धि करने हेतु कृत संकल्पित है.

## संपर्कः

यदि आपको इस प्रकार की खेती के लिए अधिक जानकारी अथवा मार्गदर्शन चाहिए तो कृपया नीचे दिए पते पर संपर्क करें


### डेवलपमेन्ट सपोर्ट सेन्टर, कुक्षी

मोबाईल नंबरः ०९४०७१२३९१३

कान्तिकुमार जैन के मकान में, होण्डा शो-रूम के सामने, अलिराजपुर रोड, कुक्षी, जिला धार, (म.प्र.)

### डेवलपमेन्ट सपोर्ट सेन्टर, मनावर

मोबाईल नंबरः ०९४०७१३९३४३, मांगलिक भवन के पास, मेला मैदान रोड, मनावर- ४५४४४६, जिला- धार


Concept & Design by : www.madhyam.org